आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-74 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त-सितम्बर 2018 | मूल्य - 5 रुपए

बेघर बच्चे क्यों नहीं रहना चाहते शेल्टर होम में ?

बालकनामा टीम ने की पड़ताल

पेश है इसके पीछे की विशेष रिपोर्ट

बातूनी रिपोर्टरः बब्लू, हिना, प्रियंका व रिपोर्टरः शम्भू, दीपक और पूनम

हम इस खबर के द्वारा किसी की भावनाओं व हृदय को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते हैं और न ही हम किसी के विरोध में कोई बात कहना चाहते हैं। इस खबर के माध्यम से हम सिर्फ इस पीढ़ी के बच्चों का संदेश व उनकी ''आपबीती कहानी, उनकी ही जुबानी'' आप सब तक पहुंचाना चाहते हैं। यह खबर है कुछ ऐसे शेल्टर होम की जहां बच्चों पर हो रहे अत्याचारों और अव्यवस्थाओं की वजह से परेशान होकर बच्चे भागकर पुनः सड़क पर वापस आ चुके हैं। जब इसका कारण उनसे पूछा गया, तो उन्होंने जो आपबीती दास्तान बयान की, उसको सुनकर बालकनामा के पत्रकारों के भी रोंगटे खड़े हो गए।

उन्होंने बताया कि शेल्टर होम में बच्चों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है और उन्हें किन-किन परेशानियों से गुजरना पड़ता है? इस पीढ़ा से गुजरकर आज वह अपनी जिंदगी कैसे बिता रहे हैं? इसका अंदाजा न तो आप लगा सकते हैं और ना हम। इन बच्चों की जिंदगी सड़क पर गुजरती है, लेकिन जब उनको शेल्टर होम ले जाया जाता है, तो वह सोचते हैं कि शायद अब तो उनकी जिंदगी की कठिनाइयां कुछ कम होंगी, मगर शेल्टर होम में पहुंचकर जब वह देखते हैं, तो उनकी सारी उम्मीदें टूट जाती हैं। एक बार फिर वह अपनी जिंदगी की कठिनाइयों में उलझ जाते हैं और खुद को ही गलत मान बैठते हैं। क्योंकि उनके सारे

सपने एक बार फिर टूट जाते हैं, और फिर से ये बच्चे अच्याचारों और अव्यवस्थाओं की जिंदगी जीने को मजबूर होते हैं।

ऐसा सुनकर जब हम पत्रकारों ने उनकी पीड़ा का पता लगाया, तो उन्होंने सारा किस्सा बयान कर दिया। उन्होंने बताया कि शेल्टर होम में हर जगह से बच्चों को लेकर आया जाता है, जैसे कि रेलवे स्टेशन से, सड़क से, फुटपाथ से या फिर जिन बच्चों के सर पर कोई साया नहीं होता; जैसे कि उनके माता-पिता की मृत्यु होना आदि। बच्चों ने अपनी पीड़ा को सामने रखते हुए बताया कि जब उनको शेल्टर होम लेकर जाया जाता है, तो उनको लगता है कि उनको नई जिंदगी मिल रही है, जिसमें उनको रहने के लिए एक अच्छी जगह मिलेगी, पहनने के लिए अच्टे वस्त्र मिलेगें, भूख मिटाने के लिए अच्छा भोजन मिलेगा और खेलने के लिए अच्टे खिलौने व मित्र मिलेगें, जिनसे वह अपने दिल की हर बात खुलकर कह सकेगा, और शायद उनकी वजह से उनकी जिदंगी का अकेलापन भी दूर हो जाएगा। मगर वहां पंहुचकर उन्हें एक अलग ही दृश्य देखने को मिलता है। जहां पहुंचकर वह सोचते हैं कि इससे अच्छी तो उनकी सड़क की जिंदगी थी।

जब उनसे इसकी वजह पूछी गई, तो उन्होंने बताया कि शेल्टर होम में बच्चों को अच्छा नहीं लगता है; क्योंकि वहां पर अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है और खासकर नए बच्चों के साथ यह परेशानी ज्यादा देखने को मिलती है। उन्होंने बताया कि जब कोई बच्चा नए शेल्टर होम में प्रवेश करता है, तो वहां पुराने बच्चे उससे चिढ़ते हैं और उसके ऊपर हुकूमत चलाते हैं और बहुत ही बुरा व्यवहार करते हैं जैसे कि उसके वस्त्र छीनना। बच्चों द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि भोजन भी सही प्रकार से शेल्टर होम में नहीं दिया जाता है। दाल पानी की तरह होती है, दूध में भी पानी की मिलावट होती है। सब्जी में कभी नमक तेज होता है और कभी लगता है कि नमक डाला ही नहीं गया होता है। इसलिए हम बच्चों को खाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है।

बच्चों ने शेल्टर होम का जिक्र करते हुए कहा कि शेल्टर होम में दादागीरी होती है। शेल्टर होम में जो लीडर होता है, वह बच्चों पर अत्याचार करता है। अगर लीडर ने जिस बच्चे को जिस समय बुलाया, अपना काम कराने के वास्ते, उस समय वह बच्चा लीडर के पास उपस्थित नहीं हुआ, तो लीडर से पिटाई खानी पड़ती है। बच्चों ने यह भी बताया कि लीडर हम बच्चों से अपने पहने हुए वस्त्र धुलवाते हैं, जूता, बर्तन साफ करवाते हैं। शेल्टर होम के अंदर जो पेड़ पौधे लगे हुए हैं, उन सभी पेडों में पानी डलवाते हैं। अगर हम बच्चे किसी काम को करने से इंकार करते हैं, तो शाम के समय हम बच्चों को लाइन में खड़ा करके चप्पल

शेष पृष्ठ 3 पर

बच्चों के सुझाव

13 वर्षीय बालक का कहना है कि शेल्टर होम के अंदर चार बजे सुबह ही बच्चों को उठा दिया जाता है और नहाने के लिए दबाव बनाते हैं, फिर चाहे सर्दियों का मौसम हो या गर्मियों का। इस वजह से हम बच्चों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। गर्मियों के मौसम में हम बच्चों को कम परेशानी होती है लेकिन सर्दियों में ठंड के मारे नहाया नहीं जाता है लेकिन मजबूरन हमें इस पीढ़ा को झेलना पड़ता है। इस प्रकार से हो रहे अत्याचार पर रोक लगायी जानी चाहिए। बच्चों की परेशानियों को ध्यान में रख कर ही मौसम के अनुसार नियमों में बदलवाव होना चाहिए।

14 वर्षीय बालक का कहना है कि हम सभी जानते हैं कि हम बच्चों के लिए पौष्टिक आहार लेना कितना आवश्यक है। अगर हम पौष्टिक आहार नहीं लेते हैं, तो हमारे शरीर का विकास रुक सकता है, शरीर में कई तरह की कमियां आ सकती हैं। कई तरह की बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि सभी शेल्टर होम के अंदर स्वादिष्ट पौष्टिक आहार मिले, ताकि हम बच्चों का सही विकास हो सके और होने वाली बीमारियों से मुक्ति मिल सके।

15 वर्षीय बालक अपने बारे में जिक्र करते हुए कहता है कि मेरे माता-पिता का देहांत हो गया है। तब से मैं अपने चाचा-चाची के साथ रहता था लेकिन चाचा-चाची मुझ पर अत्याचार करते थे। इसलिए मैं अपने घर को छोड़कर रेलवे स्टेशन पर आ गया था। स्टेशन पर कुछ पुलिस वाले भइया ने मुझे समझाया कि स्टेशन मेरे लिए सुरक्षित स्थान नहीं है और शेल्टर होम के बारे में जानकारी दी और मुझे शेल्टर होम भेज दिया। लेकिन मैं शेल्टर होम में कुछ माह ही रह पाया; क्योंकि शेल्टर होम के अंदर मुझे काफी सारी कठिनाइयों से जूझना पड़ता था। मैं चाहता हूं कि आने वाले भविष्य में शेल्टर होम के अंदर कोई कठिनाई नहीं हो। सड़क पर रहने वाले सभी बच्चे तथा बेघर बच्चे शेल्टर होम के अंदर सुरक्षित रहें। वह हमारी तरह किसी भी प्रकार की समस्यायों से ना जूझें।

16 वर्षीय बालक का कहना है कि शेल्टर होम के अंदर कुछ भी समस्या होती है, तो शेल्टर होम के कार्यकर्ता देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। उन्हें इस तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए; बल्कि उन्हें अगर कोई बच्चा किसी तरह की मुसीबत में नजर आती है, तो कार्यकताओं को जल्द से जल्द मदद करनी चाहिए। क्योंकि कार्यकार्ता ही शेल्टर होम के अंदर रह रहे बच्चों के माता-पिता के समान हैं। अगर कार्यकर्ता ही बच्चों की परेशानी व उनकी भावनाओं को नहीं समझेंगे, तो बच्चे अपनी परेशानी किस से बयां करेंगे।

17 वर्षीय बालक ने बताया कि हमारा भविष्य आप लोगों के हाथ में है, आप लोगों से यही गुजारिश है कि हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार नहीं किया जाए और हमें सुरक्षित रहने दें, ताकि हम अपनी जिंदगी में आगे बढ़ सकें और अपनी जिंदगी बना सकें। जब हम 18 साल के होने के बाद शेल्टर होम से बाहर जॉब करने के लिए जाएं, तो हम गर्व से यह कहने के लिए मजबूर हो जाएं कि हमने उस शेल्टर होम में रहकर पढ़ाई-लिखाई की है, और अपनी जिंदगी में आज कामयाबी पायी है। हमें उम्मीद है कि कुछ इस तरह ही होगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

संपादकीय

मेल (लड़के) बच्चे भी हो रहे हैं शेल्टर होम में दरिंदगी के शिकार

बड़े ही अफसोस की बात है कि जहां बच्चियों की सुरक्षा होनी चाहिए वहीं उनका शोषण हो रहा है। मुजफ्फरपुर और देवरिया के बालिका गृह में बच्चियों से हुए यौन शोषण के मामले से पूरा देश शर्मसार है। मुजफ्फरपुर के शेल्टर होम में मिली 40 लड़कियों में से 34 के साथ रेप की पुष्टि हुई है। इन्हें नशीली दवाएं देकर गलत काम के लिए मजबूर किया जाता था। बिहार के मुजफ्फरपुर का मामला शांत भी नहीं हो पाया था कि यूपी के देवरिया जिले से भी एक ऐसा ही मामला सामने आ गया। शेल्टर होम दरिंदगी के अड्डे बन चुके हैं। ऐसा पहली बार ही नहीं हुआ है। ऐसा सिलसिला लगातार जारी है, बस जगह और तारीखें बदलती रहती हैं। 2012 में हरियाणा के रोहतक और करनाल में, 2013 में महाराष्ट्र के एक शेल्टर होम में भी कुछ ऐसी ही घटनाएं हुई थीं। 2015 में देहरादून के एक नारी निकेतन में कुछ मूक बधिर महिलाओं के साथ रेप का मामला सामने आया। इसी साल अप्रैल में वहां नारी निकेतन से दो मूक-बधिर युवतियों के गायब होने के मामले सामने आए। सवाल यही है कि लड़कियों या औरतों को सुरक्षा के लिहाज से जिस स्थान पर रखा जाता हो और उनकी सुरक्षा पर सरकारी कोष से धन व्यय किया जाता हो, अगर वे स्थान ही उनके लिए सबसे असुरक्षित बन जाएं तब क्या रास्ता और कौनसा स्थान हो सकता है उन्हें सुरक्षित रखने का?

देश में शेल्टर होम्स की निगरानी और मनीटरिंग को लेकर पुख्ता सिस्टम नहीं है। आमतौर पर शेल्टर होम की निगरानी जिला मजिस्ट्रेट, जिला जज, जिला प्रोबेशन और बाल कल्याण अधिकारी करते हैं, लेकिन वास्तव में इन सभी स्तरों पर निगरानी का काम ठीक तरह से नहीं हो रहा है। इन होम्स की अडिट के नाम पर इनके इंफ्रास्ट्रक्चर का ही अडिट होता रहा है, इनका सोशल आडिट, इनके संचालकों को लेकर जिस तरह का अडिट होना चाहिए, वैसा अडिट नहीं होता है। इस तरह की घटनाओं के आरोपियों के राजनीतिक रसूख व राजनैतिक संरक्षण के बल पर ही इन होम्स में हैवानियत का खेल खेला जाता है। असल में राजनीतिज्ञ ही कानूनी कार्रवाई को प्रभावित करने की हैसियत रखते हैं। होम्स के संचालक अकसर बेहद रसूखदार होते हैं। वे जानते हैं कि ये पीड़ित न तो आवाज उठा पाएंगे और आवाज उठाई भी तो उसे आसानी से दबाया जा सकता है। सारा खेल पैसे, पावर और फ्री सेक्स का है।

इतना ही नहीं, मेल (लड़के) बच्चे भी हो रहे हैं इस तरह की दरिंद्गी के शिकार। जैसा कि बालकानामा के पत्रकारों द्वारा इसके शिकार मेल (लड़के) बच्चों की आपबीती समाज और प्रशासन को वस्तुस्थिति से अवगत कराने और यथायोग्य कार्यवाही की इच्छा से कवर स्टोरी के तौर पर इस अंक के फ्रंट पेज पर प्रकाशित की गयी है।

हमें उम्मीद है कि आप पाठकगण बालकनामा की पत्रकार टीम द्वारा संकलित समाचारों, स्टोरियों तथा उठाये गये सवालों के साथ ही भाषा-शैली का अवलोकन कर अपनी टिप्पणी और सुझाव अवश्य देंगे।

बालकनामा टीम

स्टेशन पर लड़कियों के साथ होती है जोर-जबरदस्ती

रिपोर्टर: पूनम

हाल ही में रेलवे स्टेशन पर लड़कियों को हो रही एक नई समस्या सामने आई है। इसको हम नई समस्या भी नहीं कह सकते हैं; क्योंकि यह एक ऐसी समस्या है, लड़कियां जिसकी शिकार अरसे से हो रही हैं। इसका समाधान आज तक नहीं हो पाया है। यह खबर ऐसी उन बच्चियों की है, जो आज भी जुल्म का शिकार बन जाती हैं। बालकनामा के पत्रकार ने बताया कि रेलवे स्टेशन पर रात के अंधेरे में लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं। स्टेशन पर लड़कियां मजबूरी में रहती हैं। जब हमारी पत्रकार इन लड़कियों से मिली और लड़कियों की पीढ़ा सुनी, तो पत्रकार की आंखो में आंसू आ गए। लड़कियों का कहना है कि हम लड़कियां स्टेशन पर सुरक्षित महसूस नहीं करते हैं; क्योंकि स्टेशन पर सभी लड़के नशे में धुत्त रहते हैं और हमारे साथ जोर-जबरदस्ती करते हैं। लगभग 16 वर्षीय उम्र तक की लड़कियों का कहना है कि जब हम लड़कियां रात को सो रहे होते हैं, तो वह लड़के लोग आधी रात को आते हैं और हमारे साथ अश्लील हरकतें करते हैं। अगर हमलोग ऐसा करने से उन्हें मना करती हैं, तो वह हमलोगों को मारते हैं और मुंह दबाकर हमारा शोषण करते हैं। हमारी मजबूरी कोई नहीं समझता है। जब हमारे साथ इस तरह का शोषण हो रहा होता है, तो स्टेशन के आस-पास रहने वाले व्यक्ति भी हमारी मदद नहीं करते हैं। वह देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। हम सभी लड़कियां स्टेशन पर मर-मर के जी रहे हैं। कोई भी व्यक्ति हमारा शोषण करके चला जाता है। हम सभी लड़कियां आप से एक सवाल का जवाब पूछ रहे हैं- आप ही बताईये क्या हम लड़कियों को सुरक्षित रहने का अधिकार नहीं है ? हम यही चाहते है कि कृपया हम लड़कियों के साथ इस तरह का व्यवहार ना करें। हमें सुरक्षित रहने दें।

क्या कार्यकर्ता करेंगे नियमों का पालन ?

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार के विजिट के दौरान एक खबर सामने आई कि जब बच्चे शराब की दुकान में शराब लेने के लिए जाते हैं, तो शराब की दुकान के कार्यकर्ता उन्हें शराब देने से इन्कार नहीं करते हैं। इस समस्या को लेकर हमारे पत्रकार बच्चों से मिलने पहुंचे और उनसे बातचीत की, तो बच्चों से जानकारी प्राप्त हुई कि शराब की दुकान पर एक बोर्ड लगा हुआ है जिसमें यह साफ-साफ लिखा है कि 21 वर्ष से कम आयु वाले व्यक्तियों को शराब देना सख्त मना है। लेकिन दूसरी ओर जब बच्चे उसी दुकान में शराब लेने के लिए जाते हैं, तो उन्हें कोई भी कार्यकर्ता शराब देने से इन्कार नहीं करते हैं।

पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपको शराब की दुकान जाने की आवश्यकता क्यों पड़ती है ? 15 वर्षीय बालक ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि हमारी बस्ती का माहौल बहुत गंदा है। क्योंकि इस स्थान पर कुछ बड़े व्यक्ति हैं, जो रिक्शा चलाने का कार्य करते हैं और जब वह रिक्शा चलाकर अपने घर वापस आते हैं, तो वह हम जैसे बच्चों को कुछ पैसे का लालच देकर शराब मंगवाते हैं।

कुछ बच्चों का कहना है कि हम जब शराब लेकर वापस आते हैं और जिस व्यक्ति ने हमें शराब लेने के लिए भेजा है वह बख्शीश के तौर पर हमें पांच-दस रूपये दे देते हैं, अगर कभी उनके पास खुले पैसे या पैसे नहीं होते हैं तो वह हम बच्चों को शराब पीने के लिए मजबूर करते हैं जिसकी वजह से हम बच्चों पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। हम बच्चे चाहते हैं कि शराब की दुकानें, सरकार द्वारा जो नियम बना गए हैं, उन नियमों के माध्यम से चलें तभी हम बच्चे इस परेशानी से मुक्त हो पाएंगे।

माता-पिता का तरीका कर रहा बच्चों की जिंदगी बर्बाद

रिपोर्टर: पूनम, आगरा

आगरा में दौरे के दौरान हमें पता चला कि बालमजदूरी बढ़ती ही जा रही है इस संबंध में पत्रकार काफी छानबीन किया और बच्चों से यह जानने की कोशिश की कि आखिर बच्चे बालमजदूरी की ओर क्यों बढ़ रहे हैं। काफी छानबीन करने के बाद सामने आया कि उन बच्चों के माता-पिता बहुत गरीब हैं, इसलिए वह अपने बच्चों से बालमजूरी कराते हैं तथा माता-पिता से बातचीत करने पर पता चला कि बाजार में आयेदिन कमेटी वाले आते रहते हैं जिसकी वजह से हम बड़े व्यक्ति सही प्रकार से समान नहीं बेच पाते हैं। क्योंकि कमेटी आने के बाद सारा सामान वह उठाकर ले जाते हैं और जब हम सामान टुड़ाने के लिए जाते हैं, तो वह अधिक पैसों की मांग करते हैं, जो देना हमरे लिए बहुत कठिन साबित होता है। इसलिए हम अपने बच्चों को भेजते हैं, ताकि अगर कमेटी वाले सामान ले भी गए, तो हमारे बच्चों पर तरस करके सामान वापस दे देंगे। यह था माता-पिता का बयान कि वह इस लिए बच्चों से काम करवाते हैं। लेकिन क्या आप सोचते हैं कि इस विषय पर क्या बच्चे खुश होंगे ? आईए, अब बच्चों की पीढ़ा सुनते हैं कि वह किस प्रकार बाजार में सामान बेचते हैं। 14 वर्षीय बालक ने अपनी पीढ़ा रखते हुए कहा कि हमारे माता-पिता, जो कर रहे हैं, उन्हें लगता है कि वह उचित है लेकिन हम बच्चों की क्या दशा होती है, वह हमारे माता-पिता सुनने के लिए तैयारी नहीं होते हैं। यह पीढ़ा हम आपके समाने रख रहे हैं कि हम किस तरह बाजार में अपना पूरा दिन गुजारते हैं, पहली समस्याः- जब हम बच्चे सामान लेकर बाजार जाते हैं, तो एक रिंग रोड से होकर गुजरना पड़ता है, जब हमारे हाथ में सामान होता है, तो सड़क पार करने में बहुत कठिनाई होती है। हमें भय लगा रहता है कि कहीं हमारे साथ दुर्घटना नहीं हो जाए। 15 वर्षीय बालक का कहना है कि हम मानते हैं कि हमारा परिवार बहुत गरीब है लेकिन जो हमारे माता-पिता तरीका अपना रहे हैं, वह गलत है। दूसरी समस्याः- बच्चों ने बतायी कि एक ओर रिंग रोड से हम बच्चे गुजरते हैं और दूसरी ओर रिंग रोड, जहां बाजार लगती है, वहां जब हम सामान बेचते हैं, तो काफी भय लगता है, क्योंकि इस रिंग रोड से काफी तेज रफ्तार से वाहन निकलते हैं। इसलिए हम सभी बच्चे चाहते हैं कि हमारे माता-पिता हमारे साथ इस तरह का व्यवहार न करें और हमें बालमजूरी से मुक्त करें। हमारी जिंदगी बर्बाद न करें। हमारे माता-पिता हम बच्चों के साथ अपना व्यवहार बदलें तब ही हम बच्चे शिक्षा की ओर बढ़ सकेंगे और अपना भविष्य सुधार सकेंगे।

भय में गुजरती जिंदगी

रिपोर्टरः दीपक

हमारे पत्रकार ने बताया कि पूर्वी दिल्ली के एक इलाके में जब बच्चों से उनकी समस्या के ऊपर बात की गई तो बच्चों ने बताया कि उन्हें हमेशा एक भय सताता रहता है कि कहीं उन्हें कोई उठाकर न ले जाए। जब पत्रकार ने इस भय की वजह बच्चों से जानी तो बच्चों ने बताया कि अक्सर इस इलाके से बच्चे गायब हो जाते हैं, जो कभी वापस अपने परिवार से नहीं मिल पाते हैं। बच्चों ने बताया कि इस इलाके के आस-पास एक खेत है, जहां कोई भी लड़की किसी काम से जाती है, तो वापस नहीं आ पाती है; या तो उसको गायब कर देते हैं, या उसके साथ अश्लील हरकत कर दी जाती है, जिसके कारण कोई भी खेतो में जाने से डरता है। बच्चों ने यह भी बताया कि कोई भी बच्चा रात में अपने घर से बाहर नहीं निकल सकता; क्योंकि उसे गायब कर दिया जाता है। वह गली से कब, कैसे और कहां गायब हो जाता है, इस रहस्य का जवाब किसी के पास नहीं है। इन घटनाओं ने सबके दिलो में भय पैदा कर दिया है। इस दुर्घटना का शिकार अक्सर लड़कियां ही बनती हैं। इलाके में लड़कियों के गायब होने की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं। यह भय बच्चों के मन में बैठ चुका है जिसके कारण वह अपने घर से बाहर नहीं निकलते हैं और भय में ही रहकर अपनी जिंदगी गुजार रहे हैं। बच्चे चाहते हैं कि इन दरिंदों पर तुरन्त कार्यवाही हो, ताकि वे भयमुक्त जीवन जी सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

इस तरह कठिनाईयों का सामना करके मासूम बच्चे चलाते हैं अपना परिवार

बातूनी रिपोर्टर: बाबू व रिपोर्टर: शम्भू

तुग़लकाबाद गांव में एक बहुत बड़ा कूड़े का हब है, जहां बदरपुर बोर्डए तुग़लकाबाद गांव के आस-पास रहने वाले बच्चे व माता-पिता कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। जब यह उस हब पर कूड़ा बीनने के लिए जाते हैं तो पूरी तैयारी के साथ जाते हैं। पूरी तैयारी का मतलब है, उस हब पर काफी गंद्गी है, जिसमें तमाम नुकीले पदार्थ भी होते हैं जिनसे सुरक्षित रहने के लिए वह प्लास्टिक के जूते व जुराबें, जो काफी लम्बी होती हैं, वह पहनकर जाते हैं, ताकि वह सुरक्षित रहें। जब हमारे पत्रकार ने बच्चे तथा माता-पिता से बातचीत की तो बच्चों ने बताया कि हम इस कार्य से संतुष्ट नहीं हैं, मगर यह अपना पेट पालने के लिए यह कार्य मजबूरी में कर रहे हैं, ताकि परिवार का गुजारा हो सके। बच्चों ने इस हब पर किस प्रकार व खासकर किस स्थान से कूड़ा-कबाड़ा लाया जाता है, यह भी विस्तार से बताया। इस हब पर खास करके ट्रक द्वारा कूड़ा-कबाड़ा अस्पताल व घरों से लाया जाता है। जब इस हब पर ट्रक आते-जाते हैं, तो काफी धूल मिट्टी उड़ती है जिसकी वजह से हम बच्चों के नाक-मुंह में धूल-मिट्टी जाती है। हमारे नाक-मुह में धूल-मिट्टी जाने कर वजह से बहुत तेज दर्द होता है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप इतनी लम्बी जुराबें क्यों पहनते हो ? बच्चो ने बताया कि जब ट्रक द्वारा दें के गये कूड़े की हमलोग टंटाई-बिनाई करते हैं, तो हमारे पैर उस कूड़े के ढेर में दब जाते ळे, अगर हम इतने लम्बी जुराबें नहीं पहनेंगे तो हमारे पैरों में खुजली होनी शुरू हो जाएगी और इस गंद्गी के कारण लाल-लाल दाने भी होने की संभावना रहती है। इसलिए हमलोग इतनी लम्बी जुराबें पहनते हैं, ताकि हमारे पैर सुरक्षित रहे हैं। इस गंद्गी से हम अपने पैरों को तो सुरक्षित रख लेते हैं लेकिन मौसमी इस गर्मी की वजह से हमारे पैरों में जलन होने लगती है जिसके कारण हमलोग अधिक समय तक हब पर कार्य नहीं कर पाते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपलोग हब के अलावा किसी दूसरे स्थान पर कूड़े कबाड़ा बीनने के लिए क्यों नहीं जाते है ? बच्चों ने बताया कि बेशक हमें इस हब पर गंद्गी का सामना करना पड़ता है लेकिन हमें इस हब के अलावा कहीं और अधिक कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए नहीं मिलता है।

मासूमियत और बचपन को छीनता बालविवाह

रिपोर्टर: दीपक

क्या आज भी हमारे समाज में बालविवाह जैसी समस्या देखने को मिलती है ? तो इसका जवाब है हां। क्योंकि आज भी कई ऐसे स्थान हैं, जहां मासूम बच्चों का बालविवाह कर दिया जाता है। यह समस्या किसी एक जगह या कोई एक परिवार की नहीं है, बल्कि अनेक स्थानों की, और अनेक परिवारों की है। हमारे पत्रकार जब भी कहीं विजिट पर जाते हैं तो अक्सर उन्हें यह समस्या देखने को मिलती है। अफसोस है कि जागरूकता और आधुनिकीकरण के बावजूद आज भी माता-पिता की सोच नही बदली है। वर्तमान में भी माता-पिता बिना बच्चों की आज्ञा से व बिना उनके मन की बात जाने, उनकी जिंदगी का फैसला कर देते हैं, उनके भविष्य के बारे में भी नहीं सोचते और यहां तक कि जब इन परिवारों में कोई नन्हा बच्चा जन्म लेता है, उसी वक्त वह उसका रिश्ता कर देते हैं। जब लड़का-लड़की 14 व 15 साल के हो जाते हैं, तब उनकी विदाई कर दी जाती है। जिस वक्त उन बच्चों के हाथ में कलम-किताब होनी चाहिए, उस वक्त वह बच्चे घरों की जिम्मेदारियां उठाना शुरू कर देते हैं। उनके खेलकूद की उम्र के दिन कब काम करते-करते निकल जाते हैं उन्हें कभी पता ही नहीं चलता। उन मासूम बच्चों से जब कभी कोई बचपन की मनमोहित घटना या कुछ अच्छे पलों के बारे में पूछा जाता है, तो उस मासूमों का जबाव होता है कि वह किस तरह बचपन में खेलकूद छोड़कर अपने माता-पिता कस हाथ बटाते थे और किस तरह बचपन में ही उनकी शादी हो गई, नई-नई जिम्मेदारियां मिल गईं, यही बता पाते हैं। हमेशा यह देखा जाता है कि आज भी परिवार वाले लड़कियों को पढ़ने नहीं देते हैं और चाहते हैं कि वह घर का काम सीखें और अक्सर लड़कियों से कहते हैं कि घर का काम सीखोगी तो शादी के बाद काम आयेगा। ऐसे माता-पिता का तर्क होता है कि पढ़ाई-लिखाई करने के बाद भी उनको घर ही सम्भालना है। बच्चे अपने बालविवाह के फैसले से हमेशा परेशान ही नजर आते हैं, क्योंकि वह भी अन्य बच्चों की तरह पढ़ाई करना चाहते हैं, खेलकूद करना चाहते हैं और अगर माता-पिता किसी वजह से बच्चों के जन्म होने पर उनकी शादी नहीं करते तो 12-13 साल तक तो उनकी शादी का फैसला ले ही लेते हैं। आपको इन सब बातों से और हमारे पत्रकार की खबरों से अंदाजा हो ही चुका होगा कि आज भी अनेक बच्चे बालविवाह का शिकार बनते जा रहे है। खासकर लड़कियों के माता-पिता और अन्य परिवार वालों की सोच कब और कैसे बदलेगी जब यह मासूम अपना बचपन खुशी से जी पाएंगे।

अन्धविश्वास ने ली मासूम बच्चे की जान

बातूनी रिपोर्टर: हीना व रिपोर्टर:शम्भू, दक्षिण दिल्ली

दक्षिण दिल्ली के एक इलाके में अन्धविश्वास ने मासूम बच्चे की जान ले ली। हमारे पत्रकार द्वारा पता चला कि इस इलाके में कुछ दिनों से बच्चों में माता की बीमारी (चिकनपॉक्स) फैली हुई है। हमें सुनने में आया कि 15 से 20 बच्चे इस बीमारी की लपेट में आ चुके हैं, मगर उनके माता-पिता उनका कोई इलाज कराते नजर नहीं आए। क्योंकि उनका मानना है कि इस बीमारी में किसी डॉक्टरी इलाज की जरूरत नहीं होती है, यह घर में रहकर और नीम के पत्तों से ही ठीक हो जाती है। इसका परिणाम यह देखने को मिला कि एक परिवार ने अपने दो चिराग खो दिए, यह घरेलू नुस्खे उनकी जान नहीं बचा पाए। यह अन्धविश्वास सिर्फ इसी परिवार में नहीं, बल्कि अन्य परिवारों में भी देखने को मिला। दुख की बात यह है कि बच्चे बीमारियों और परेशानी से जूझते हुए भी सड़कों पर रहते हैं और अपने परिवार की गुजर-बसर में पूरा सहयोग करते हैं। हम चाहते हैं कि सरकार कुछ ऐसा करे जिससे सड़क पर रहने वाले परिवार को सही जानकारी हो पाए। इसके चलते वह अपने परिवार के लोगों का समय पर और सही प्रकार से इलाज करवा पाएं तथा इस अन्धविश्वास से अन्य बालक सुरक्षित जिंदगी जी सकें और साथ ही साथ इन परिवार वालों से निवेदन है कि समय रहते अपने परिवार के सदस्यों का इलाज करवाएं और अन्धविश्वास का शिकार न बनें।

माता-पिता के दबाव ने किया बच्चों का जीना दुशवार

रिपोर्टर: पूनम, आगरा

बालकनामा के पत्रकार ने बच्चों के साथ एक बैठक की। इस बैठक के दौरान हमें यह पता चला कि उन बच्चों के माता-पिता उन पर अत्याचार करते हैं आईए, हम विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। बच्चों ने बताया कि हम भूतकाल में जूते बेचने का कार्य करते थे लेकिन उमसभरी झुलसाने वाली गर्मी के कारण हमारा काम बहुत मंदा चल रहा है। क्योंकि लोग गर्मी में जूते कम पहनते हैं, चप्पल ज्यादा पहनते हैं जिसकी वजह से हमारा कार्य बहुत कम चलने लगा है लेकिन हमारे माता-पिता यह बात सुनने के लिए तैयार नहीं। उनको सिर्फ पैसों से मतलब है। इसलिए हम बच्चे पूरे दिन इधर-उधर मंडराते हैं, फिर भी सही कमाई नहीं होती है। इसलिए हमारे माता-पिता हम बच्चों से नाराज रहते हैं और हम बच्चों पर पैसे का दबाव डाल रहे हैं। 12 वर्षीय बालक का कहना है कि एक दिन की बात है, जब मैं 50 रूपये कमाकर अपने घर गया, तो मेरी मां ने मुझे खाना नहीं दिया और मारने के लिए दौड़ी, इसकी वजह से मैं घर से भागकर अपने दोस्तों के पास चला गया। वहां जाने के बाद पता चला कि उनके साथ भी इसी तरह का व्यवहार हुआ है। 14 वर्षीय बालक का कहना है कि माता-पिता के इस व्यवहार से हम बच्चे बहुत परेशान हैं। माता-पिता के भय में हम बच्चे गलत कदम उठाने के लिए मजबूर हो रहे हैं। हमारा कहना है कि हमारे माता-पिता हमारे साथ इस तरह का व्यवहार ना करें और हमारी मजबूरियों को समझें, तभी हम बच्चे इस परेशानी से मुक्त हो पाएंगे।

बेघर बच्चे क्यों नहीं रहना चाहते शेल्टर होम में?

पृष्ठ 1 का शेष

से मारते हैं, या अगले सुबह दो तीन घंटे मुर्गा बनाकर कड़ी धूप में खड़ा रखते हैं। इतना ही नहीं लीडर व पुराने बच्चे शेल्टर होम में आए हुए नए बच्चों को मोहरा बनाते हैं। जैसे कि शेल्टर होम के कुछ भाग में कैमरे लगे हुए हैं और एक स्थान ऐसा है जहां कैमरे नहीं लगे हुए हैं, तो शौचालय लीडर व पुराने बच्चे शौचालय के नए बच्चों का इंजार करते हैं कि कब वह शौच करने के लिए आएं और हम अपने चंगुल में फंसा लें। बच्चों ने बताया कि यह लोग नए बच्चे के साथ अश्लील हरकत करते हैं। शौचालय में अश्लील हरकत करने के बाद मासूम बच्चों को धमकी दी जाती है कि अगर यह बात किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुंची, तो तुम्हें बहुत पीटूंगा। इस मार पिटाई के भय में मासूम बच्चे इस पीढ़ा का किसी से जिक्र नहीं कर पाते हैं और अपनी जिंदगी को घुट-घुट कर जीते हैं।

बच्चों का कहना है कि इतनी कठिनाइयों से जूझने के बाद हमारे मन में यह सवाल उठता है कि इससे तो बेहतर हमारी सड़क की जिंदगी है। इसलिए हम मजबूरन शेल्टर होम से भागकर वापस आ जाते है। शेल्टर होम से भागकर आए हुए बच्चों का कहना है कि हम बच्चे आयेदिन इतनी कठिनाइयों से जूझते है लेकिन शेल्टर होम के कार्यकर्ता कुछ नहीं बोलते है। हमारे ऊपर हो रही परेशानी को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। हमें दुख तो इस बात का है कि शेल्टर होम के अंदर एक बॉक्स है, जिसमें सभी बच्चे हो रही अपनी परेशानी को लिखकर उस बॉक्स में डालते थे, वह बॉक्स सप्ताह में दो दिन खुलते हैं- मंगलवार व शुक्रवार, फिर शेल्टर होम कार्यकर्ता उसी बॉक्स में से निकली हुई समस्या का हल करते थे लेकिन क्या फायदा एक दो दिन सही रहता था, फिर से उसी तरह बच्चों पर अत्याचार होना शुरू हो जाता था। शेल्टर होम से आए हुए एक बच्चे का कहना है कि हम जैसे ना जाने कितने ऐसे बच्चे हैं, जो बेघर व अनाथ हैं। उन सभी बच्चों के लिए एक स्थान शेल्टर होम को हम मानते थे कि सुरक्षित है लेकिन जब शेल्टर होम के अंदर बच्चों के साथ इस तरह के व्यवहार होंगे, तो हम बच्चों का भविष्य कैसे बनेगा।

क्या बदलेगी माता-पिता की सोच?

रिपोर्टर: दीपक, पूर्वी दिल्ली

बालकनामा के पत्रकार ने मीटिंग के दौरान जब बच्चों से उनकी परेशानियों पर चर्चा की तो एक बच्चे ने बताया कि जिस इलाके में वह रहता है, वहां बहुत से मुस्लिम परिवार भी रहते हैं। उस बच्चे ने उन परिवार वालों का जिक्र करते हुए बताया कि वह परिवार वाले अपने बच्चों को पढ़ने-लिखने नहीं देते हैं, और ना ही उन्हे शिक्षा के लिए किसी विद्यालय में भर्ती कराते हैं। उस बच्चे ने भी बताया कि उनके माता-पिता ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं, तो वह पढ़ाई की कीमत भी नहीं जानते हैं इसलिए बच्चों को पढ़ने-लिखने का मौका नहीं देते हैं। यही नहीं, बच्चे अपने माता-पिता से इतने डरते हैं कि कभी खुलकर किसी से बातचीत नहीं करते हैं। जब भी पढ़ाई-लिखाई की बात आती है, तो वह उस पर चुप्पी साध लेते हैं। उसने यह भी बताया कि परिवार वाले लड़का या लड़की में भेदभाव करते हैं और कहते हैं कि लड़कियां पढ़ लिखकर क्या करेंगी। यहां तक के छोटी-छोटी लड़कियों को उनके माता-पिता लड़को के साथ खेलने भी नहीं देते हैं। अगर कभी लड़कियां बाहर अन्य बच्चों के साथ खेलने आ जाती हैं, यदि उनके माता-पिता को उस बात की भनक पड़ जाती है, तो वह बुरी तरह से उन मासूम बच्चियों को मारते हैं। यह परेशानी वह मासूम बच्चे रोज झेलते हैं। उस बच्चे ने गुजारिश करते हुए कहा कि उन परिवारों को जागरूक किया जाए, जो इस तरह का बर्ताव करते हैं और चाहे लड़का हो या लड़की दोनो में भेदभाव नहीं करना चाहिए। हम बच्चों को आगे बढ़ने का मौका दिया जाए। खासकर, लड़कियों को, जो रोजमर्रा की जिंदगी जी रही हैं। हमें विश्वास है कि इस खबर को पढ़ने के बाद आपलोगों में अवश्य बदलाव आयेंगे।

हम बच्चों को चाहिए इस उलझन से आज़ादी

रिपोर्टर: दीपक

आनंद विहार की एक बस्ती से खबर आयी कि शौचालय होने के बावजूद भी बस्ती वाले खुले मैदान में शौच करने के लिए जाते हैं। इसके पीटे भी एक विशेष कारण सामने आया कि इस स्थान पर बच्चे शौचालय में शौच करने के लिए इसलिए नहीं जाते हैं, क्योंकि बस्ती की संख्या के अनुसार शौचालय नहीं बने हुए हैं। इस स्थान पर लगभग 300-400 से भी अधिक झुग्गी-झोपड़ी हैं ? अब आप खुद अनुमान लगा सकते हैं कि इस बस्ती में लोगों की कितनी जनसंख्या हो सकती है। इस स्थान पर रहने वाले बच्चों का कहना है कि हम सुबह पांच बजे जागते हैं, ताकि हम शौचालय का इस्तेमाल कर सकें, लेकिन पांच बजे जागने के बाद भी हमारा नम्बर नहीं आता है; क्योंकि हमारी बस्ती वाले हम बच्चों के जागने से पहले ही शौचालय के बाहर लाईन लगाकर खड़े रहते हैं और कभी नम्बर आ भी जाते हैं तो शौचालय इतने गंदे होते हैं, जिसकी वजह से हमारा दम घुटने लगता है। इतनी कठिनाईयों से जूझने के बाद हम बच्चे तथा हमारे माता-पिता व भाई-बहन मजबूरन मैंदान में शौच करने के लिए जाने लगे। बच्चों का कहना है कि जब हम खुले मैदान में शौच करने के लिए जाते हैं, तो हमें बहुत घृणा महसूस होती है। क्योंकि जिस रास्ते से हम बच्चे मैदान की ओर शौच करने के लिए जाते हैं वहां से रेलवे लाईन भी निकाला हुआ। उसी रेलवे लाईन के पास कुछ जुवारी जुआं खेलते रहते हैं और नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं, जिससे हम बच्चों को बहुत भय लगता है। बच्चों ने बताया कि यह तो हमारी परेशानी थी। अब हम आपको बताते हैं, जब हमारे माताजी और मेरी बहन शौच करने के लिए जाते हैं, तो उन्हें किस तरह की परेाानियों का सामना करना पड़ता है। 14 वर्षीय बालक ने घबराते हुए कहा कि जब हमारी मां-बहन मैदान में शौच करने के लिए जाती हैं, तो जुआं खेलने वाले व्यक्ति उन्हें देखकर अश्लील हरकतें करते हैं। उन्हें हमेशा इस बात का भय रहता है कि कहीं उनके साथ कोई गलत घटना न हो जाए। इसलिए हम बच्चे इस परेशानी से आज़ादी पाना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारी बस्ती में कुछ और नए शौचालय बना दिया जाएं, ताकि हमारे परिवार के सदस्यों को मैदान में शौच करने जाना न पड़े, तभी हम अपने परिवार के साथ कुशलपूर्णक रह सकते हैं।

क्या आप करवाऐंगे, इन मासूम लड़कियों को बालमजदूरी से मुक्त?

बातूनी रिपोर्टर: निलेश व रिपोर्टर: शम्भू

बिहार, उत्तर प्रदेश से आए हुए परिवार अनेक प्रकार के कार्य की तलाश में इधर-उधर भटकते हुए नजर आते हैं। उनको कार्य तो मिल जाता है लेकिन उस कार्य का उचित पारिश्रमिक (मजदूरी) नहीं मिल पा रही है, जिससे उनके परिवार का गुजारा ठीक से नहीं हो पा रहा है। इसलिए यह परिवार वाले अपने बच्चों, खासकर लड़कियों को बालमजदूरी की ओर बढ़ा रहे हैं। माता-पिता का कहना है कि अगर हम अपने बच्चों से काम नहीं कराऐंगे, तो हमारे परिवार का खर्चा कैसे पूरा होगा। इसी विषय को लेकर जब हमारे पत्रकार लड़कियों से बातचीत करने पहुंचे, तो कुछ ऐसी बातें पता चलीं जिन्हें सुनकर आप चौंक जाएंगे। तो आईए, हम इस विषय पर विस्तार से जानकारी प्राप्त करते हैं। हमारे पत्रकार को पता चला कि यह लड़कियां ऐसी फैक्ट्री में काम करने के लिए जाती हैं, जहां बिजली के तार बनाए जाते हैं और यह लड़कियां

सुबह नौ बजे से लेकर रात को नौ बजे तक इस कार्य में लगी रहती हैं। पत्रकार ने उन लड़कियों से पूछा कि आपलोग बिजली के तार कैसे बनाते हो ? लड़कियों ने बताया कि पहले सिलवर के पदार्थ से मशीन के सहयोग से तार बनाते हैं, उसके बाद प्लास्टिक से उस सिलवर तार को लपेटते हैं, उसके बाद मशीन द्वारा बिजली का तार तैयार करते हैं। पत्रकार ने लड़कियों से पूछा कि इस कार्य में आपलोगों को कोई हानि भी पहुंचती है ? लड़कियों ने पत्रकार के इस सवाल का जबाव देते हुए कहा कि भईया हानि तो हर कार्य में होती है, अगर हम हानि का फिक्र करेंगे, तो हमारे परिवार का खर्चा कैसे चलेगा ? ऐसी बात नहीं है कि हमें हानि नहीं होती है। कभी-कभी तो हम बच्चों के इस काम के दौरान हाथ भी जल जाते हैं और सिलवर के तार पर काम करते समय उंगलियों में चोट भी लग जाती है जिसकी वजह से हम बच्चों के हाथ में बहुत दर्द होते हैं। हम सभी बच्चे इस कार्य से संतुष्ट नहीं है, क्योंकि हमें सही तन्खाह भी नहीं मिलती है न ही हम बच्चे समय पर सो पाते हैं। हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे परिवार की जिम्मेदारी कोई भईया-दीदी उठा लें, ताकि हमारा बचपन खराब ना हो।

आपकी नज़र में क्या यह उचित है?

रिपोर्टर: शम्भू

बिजली मीटर से संबंधित एक समस्या सामने आयी है कि ठेकेदार झुग्गी के अंदर मीटर लगाते हैं और अपने मर्जी से पैसे की मांग करते हैं। एक यूनिट की दर पांच रूपया जायज है लेकिन वह नाजायज एक यूनिट का 10 रूपया लेते हैं। इस समस्या का सामना काफी बच्चों के परिवार कर रहे हैं। जब हमारा पत्रकार उन बच्चों से बातचीत करने पहुंचे तो बच्चों ने अपनी पीढ़ा को पत्रकार के सामने खुलकर रखा। 13 वर्षीय बालक का कहना है कि मेरा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए हम अपना गांव-घर छोड़कर इस स्थान पर रहने के लिए आए हैं, ताकि हमारे माता-पिता कुछ पैसे कमा सकें, ताकि हम बच्चों के भविष्य में सुधार आ सके। यह समस्या कम होने की बजाय बढ़ती ही जा रही है। इतनी गर्मी पड़ने के बाद भी बिजली का सही प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। गर्मी से टुटकारा पाने के लिए हम पेड़-पौधों की छांव में रहते हैं, ताकि हमारे शरीर को ठंडक मिल सके। रात को सोते समय हमें बहुत कठिनाई से गुजरना पड़त है। क्योंकि जब आधी रात हो जाती है, तो हमारे माता-पिता पंखा बंद कर देते हैं, ताकि बिजली यूनिट ज्यादा नहीं आ सकें। इस परिस्थिति से जूझते हुए हमारे माता-पिता ने ठेकेदार से बातचीत की थी लेकिन ठेकेदार हमारे माता-पिता की एक भी बात नहीं सुनी। हमारे बेबस माता-पिता इस स्थान को छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकते। हम यही चाहते हैं कि जो उचित बिजली बिल आता है हम से वही लिया जाए। हम से अधिक पैसे ना लिए जाएं।

हो हमारे साथ न्याय, तभी अपने परिवार के साथ रह सकते हैं हम खुश

बातूनी रिपोर्टर: पप्पू व रिपोर्टर: शम्भू

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की सबसे बड़ी समस्या सामने आयी कि उनके माता-पिता कमाने खाने के चक्कर में कई स्थान बदलते हैं, फिर भी उनको कमाने खाने का जरिया नहीं मिल पाता है। इस बार एक खबर सामने आयी कि कुछ परिवार अपने गांव-घर को छोड़कर नोएडा के एक स्थान, जिसका नाम गुप्त रखा गया है, उस स्थान पर कई सारे परिवार भूतकाल में तंबू बनाकर अपने परिवार का गुजारा करते थे। उनको मौसम के अनुसार हर तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता था, जैसे कि बारिश के मौसम में तंबू के अंदर बड़ी ही कठिनाईयों से जुझना। दूसरी ओर कड़ी धूप से बचाव करना व अन्य। इसलिए उनलोगों ने निर्णय लिया कि वर्तमान में हम झुग्गी किराए पर लेंगे और उसी झुग्गी में अपने परिवार के साथ सुरक्षित रहेंगे। उन्होंने कुछ ही दिनों के बाद झुग्गी किराए पर ले ली, और अपने परिवार के साथ हंसी-खुशी से रहने लगे। इस तरह कुछ दिनों तक वे अच्छी खासी जिंदगी गुजारने लगे। कुछ माह बीत जाने के बाद झुग्गी के मालिक उनलोगों पर अत्याचार करने लगे, जिसकी वजह से यह बहुत दुखी महसूस करने लगे। 14 वर्षीय बालक ने बताया कि हमारे माता-पिता तथा हम बच्चे पूरे दिन गुब्बारे व कूडा-कबाडा चुनकर अपने परिवार का गुजारा करते हैं लेकिन हमारा झुग्गी मालिक हर चार-पांच माह के बाद झुग्गी का किराया बढ़ा देता है, जिसे देना हमारे परिवार वाले के लिए बहुत कठिन हो रहा है। दूसरी ओर एक महिला का कहना है कि जब हमने झुग्गी ली थी, उस समय सिर्फ सात सौ रूपये किराए देने पड़ते थे लेकिन वर्तमान में 25 सौ रूपये देने पड़ रहे हैं, जो हमारे मुताबित बहुत अधिक है। हम कड़ी मेहनत करके दो पैसे कमाते हैं। हम चाहते हैं कि हम से इतना किराया नहीं लिया जाए, तभी हम सभी लोग अपने परिवार के साथ खुश रह सकते हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आखिर कब होगा, इस समस्या का समाधान ?

बातूनी रिपोर्टरः रुक्शाना व रिपोर्टर। पूनम, आगरा

हम सभी जानते हैं कि हमारे जीवन में जल का कितना महत्व है। अगर हमें जल नहीं मिले तो हमारा जीवन जल के बिना सुरक्षित नहीं रह पाएगा। लेकिन जो परिवार सड़क तथा झुग्गी-झोपड़ी में रहते हैं, उनके लिए जल एक अहम समस्या बन गया है। हमें पता चला कि बच्चे तथा माता-पिता जल के लिए दर-दर भटकते हैं, फिर भी उन्हें इस्तेमाल जल नही मिल पा रहा है। इसके पीटे एक विषेष कारण है, आईए इस संबंध में जानकारी प्राप्त करते हैं। सड़क पर रहने वाले बच्चों से हमें यह पता चला कि वह चार-पांच दिन बाद स्नान कर पाते हैं; क्योंकि उनको जल प्राप्त नहीं हो पाता है। इस परेशानी की

वजह से बच्चों के शरीर और वस्त्र काफी गंदे रहते हैं जिसकी वजह से हमारे समाज में रहने वाले व्यक्ति उन बच्चों को घृणा की नजरों से देखते हैं। उन बच्चों के बारे में अनाप शनाप बोलते रहते हैं। लेकिन उनकी परेशानियों के बारे में जानना नहीं चाहते हैं। जल की तलाश में बच्चे अगर रेलवे स्टेशन पर पानी भरने के लिए जाते हैं, तो पुलिस अधिकारी व रेलवे स्टेशन कर्मचारी या अन्य इन बच्चों पर अत्याचार करते हैं। आप ही बताईए यह बच्चे कहां जाएं ? क्या इन्हें सुरक्षित जल पाने का अधिकार नहीं है? क्या यह बच्चे हमारे समाज का हिस्सा नहीं हैं? ऐसे ही कई सवाल हमारे मन में उठ रहे हैं। अब जानते हैं, झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चों की गुहार। बस्ती में रहने वाले बच्चों की कुछ अलग ही पीढ़ा है। उनकी बस्ती में दो तीन दिन बाद जल बोर्ड द्वारा पानी आता है, परन्तु बच्चे पानी नहीं भर पाते हैं। क्योंकि कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनके माता-पिता सुबह सात बजे से लेकर रात को आठ बजे तक अपने कामकाज से बाहर रहते हैं और जल बोर्ड का वाहन आता है, बारह एक बजे तक। इसकी वजह से यह मासूम बच्चे जल नहीं भर पाते हैं। दूसरी बात सामने आई कि जब बस्ती में जल बोर्ड का टैंकर आते हैं, तो बड़े व्यक्ति टैंकर के ऊपर चढ़ जाते हैं और पाईप द्वारा अपने घरेलू बर्तन में जल भर लेते हैं। लेकिन यह मासूम बच्चे तो काफी छोटे हैं जिसकी वजह से टैंकर पर चढ़ नहीं पाते हैं। बच्चों का कहना है कि नीचे काफी भीड़ रहती है। लोग आपस में जल के लिए झगड़ते रहते हैं। इसलिए हम मासूम बच्चे पानी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। हम यही चाहते हैं कि हमारे लिए हमारी बस्ती के अंदर नल लगा दिया जाए, ताकि हम उसी में से जल भर सकें। हमें अपने इस्तेमाल लायक भरपूर जल मिल सके।

क्या हमारी मनोकामना होगी पूरी ?

बातूनी रिपोर्टरः उम्रा व रिपोर्टरः पूनम, आगरा

आगरा से एक खबर सामने आयी है कि वर्तमान में लगातार बारिश होने की वजह से झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले बच्चे कठिन संकट से गुजर रहे हैं। जब हमारा पत्रकार उस बस्ती में पहुंचा, तो पत्रकार ने देखा कि उस स्थान की कुछ झुग्गी मिट्टी की बनी हुई हैं और कुछ तिरपाल से बनी हुई हैं, इसलिए जब हल्की भी बारिश होती है, तो झुग्गी के अंदर सारा का सारा सामान गीला हो जाता है। इस बस्ती में रहने वाले माता-पिता का कहना है कि हमारा परिवार बहुत गरीब है, हम कड़ी मेहनत करके दो पैसे कमाते हैं, तब जाकर हमारे परिवार का गुजारा हो पाता हैं इसी बस्ती में रहने वाली एक महिला ने बताया कि हमारे पास इतना पैसा नहीं है जिससे हम अच्टे से मकान बना सकें और अपने परिवार के साथ सुरक्षित रह सकें। आईए जानते हैं कि जब बारिश होती है तो यह बस्ती वाले बारिश से किस प्रकार निपटते हैं। 14 वर्षीय एक बच्चे का कहना था कि जब कभी रात को बारिश होती है, तो हमारे माता-पिता हम बच्चों को बड़े ही ध्यान से रखते हैं। हम बच्चों को गीला होने से बचाते हैं। बेशक हमारे माता-पिता बारिश में भीगकर गीला हो जाते हैं लेकिन हम बच्चों को हो रही बारिश से बचाते हैं। हमें बारिश से बचाने के चक्कर में हमारा खाने-पीने के पदार्थ गीले हो जाते है। जिसकी वजह से अगली सुबह हम बच्चों को भोजन भी मिलना मुश्किल हो जाता है। इस पीढ़ा से जूझने के बाद भी माता-पिता उसी झुग्गी की मरम्मत करते हैं, ताकि बारिश से भले ही ना सुरक्षित रहें, लेकिन कम से कम धूप से तो टुटकारा मिलता रहे है। इसी बस्ती में रहने वाले एक व्यक्ति का कहना है कि हमारा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए हम अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोच नहीं पाते हैं। हम यही चाहते हैं कि सरकार हमारी मदद करे, ताकि अपने बच्चों का भविष्य बना सकें, और घर में सुरक्षित रह सकें।

बरसात ने बढ़ाई झुग्गीवासियों की परेशानी

बातूनी रिपोर्टरः नबाव व रिपोर्टरः शम्भू, नोएडा

वर्तमान में बारिश होने की वजह से झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चे काफी परेशान हैं। बच्चों का कहना है कि हमारी झुग्गी तिरपाल व कपड़े से बनी हुई हैं, जब तेज बारिश आती है, तो हमारी झुग्गी में काफी पानी आ जाता है, जिसकी वजह से हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है। 12 वर्षीय काजल ने अपनी झुग्गी-झोपड़ी की दशा बताते हुए कहा कि कभी-कभी जब रात को बहुत तेज बारिश आती है, तो हम बच्चों को बहुत परेशानी से रात गुजारनी पड़ती है।

13 वर्षीय माशा अपनी परिवारिक स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहती है कि हमारा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए हमारे माता-पिता अपने गांव-घर को छोड़कर इस स्थान पर कमाने-खाने के लिए आए हैं। इस स्थान पर हमारे माता-पिता ने अच्टे कमरे की खोज की, लेकिन कमरे का किराया बहुत अधिक था, इसलिए हमारे माता-पिता ने झुग्गी को ही किराए पर ले

रखा है, इसमें हम जैसे-तैसे रह रहे हैं। लेकिन दिक्कत यह है कि जब बारिश आती है तो हम बच्चों का झुग्गी के अंदर रहना दुश्वार हो जाता है। जब बारिश आती है और झुग्गी में से पीने टपकने लगता है, तो हमारे माता-पिता पूरी रात तक जागते रहते हैं और हम बच्चों को भीगने से बचाते हैं। हम बच्चे इस परेशानी से बहुत परेशान हो चुके हैं, क्योंकि अगले दिन जब हमारे माता-पिता काम करने के लिए जाते हैं, तो उनको काफी नींद आती है और बारिश में भीगने की वजह से उनकी तबियत भी खराब होने कि सम्भावना रहती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि इस परेशानी से हम बच्चों को मुक्ति दिलाई जाए, ताकि हम बच्चे अपने परिवार के साथ खुश रहें।

सरकारी कर्मचारी जिम्मेदारी से काम करें, तभी हम बच्चे जी सकते हैं भयमुक्त जीवन

रिपोर्टरः दीपक

हमारे पत्रकार के अनुसार यह खबर सामने आई कि पूर्वी दिल्ली के इलाके में सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने परिवार के साथ रहते हैं। वह बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। क्योंकि जिस स्थान पर वह रहते हैं, वह सुरक्षित नहीं है। वहां पर रहने वाले ज्यादातर व्यक्ति ऐसे हैं, जिनका मर्डर व चोरी-चकारी का कार्य करना ही उनका पेशा है। इसलिए वह स्थान किसी भी व्यक्ति के लिए सुरक्षित नहीं है। क्योंकि दिन हो या रात, वहां कभी भी किसी भी व्यक्ति के साथ दुर्घटना हो जाती है। जैसे कि मर्डर एवं लूटपाथ। इस स्थान की इस बड़ी समस्या की वजह से वहां रहने वाले बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। उनके माता-पिता को उनकी जिंदगी खोने का भय हमेशा सताता रहता है। यह बात यहीं तक नहीं थमती, बल्कि काफी बार वहां के रहने वाले सदस्य जब इस भय को लेकर किसी सरकारी कर्मचारी के पास शिकायत दर्ज करवाने जाते हैं, तो उस इलाके के वह लोग सरकारी अधिकारी को रिश्वत का लालच देकर उनका मुंह बन्द कर देते हैं, ताकि उनके ऊपर कोई कार्यवाही न हो सके। जब हमारे पत्रकार ने इस मुददे पर बच्चों से बात की और स्कूल न जाने का कारण पूछा तो बच्चों ने अपनी पीढ़ा बताते हुए कहा कि उन्हें स्कूल जाते हुए बहुत भय लगता है, क्योंकि यहां अक्सर खुलेआम कभी भी, बिना वजह किसी भी व्यक्ति का मर्डर कर दिया जाता है, जिसका भय बच्चों के मन में बैठ चुका है। इसलिए बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं होते हैं। यह बच्चे निदेवन करते हैं कि सरकारी अधिकारी रिश्वत लेने के बजाय, इनलोगों की शिकायत सुनें और उस पर कार्यवाही करें।

नशे की ओर बढ़ रहे बच्चों के माता-पिता की सहयोग की अपील;

ताकि बर्बाद होने से बच सके बच्चों का भविष्य

रिपोर्टरः दीपक

हमारे पत्रकार ने पूर्वी दिल्ली के कुछ स्थान पर दौरा किया। इस दौरे के दौरान पता चला कि काफी ऐसे मासूम बच्चे हैं, जो नशे की अंधेरी दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं। इसके पीटे भी एक विषेष कारण है। पहला सवाल यह उठता है कि बच्चे नशे की अंधेरी दुनिया में कैसे लिप्त हो रहे हैं। आईए जानकारी प्राप्त करते हैं। देखा गया है कि इनकी बस्ती के आस-पास बड़े लोग समूह बनाकर नशा करते हैं और वही लोग तरह-तरह के नशीले पदार्थ का सेवन करते हैं। उन्हें ही देखकर यह मासूम बच्चे भी वर्तमान में नशा करना सीख गए हैं। बच्चे नशे की ओर कुछ इस प्रकार बढ़ते हैं, क्योंकि इनके माता-पिता तो घर पर रहते ही नहीं हैं, वह पूरे दिन अपने कामकाज में व्यस्त रहते हैं। इस तरह माता-पिता अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इस कारण बच्चे नशे की ओर तेज रफ्तार से बढ़ रहे हैं। बस्ती में रहने वाले बच्चों से जानकारी मिली कि नशा पाने के लिए बच्चे माता-पिता से झूठ बोलते हैं कि मुझे किसी चीज की जरूरत है, उसके लिए मुझे कुछ पैसों की आवश्यकता है। लाचार माता-पिता कठिनाई परिस्थिति से जूझते हुए अपने बच्चों को पैसे नहीं दे पाते हैं। बच्चे नशा लाने के लिए दूसरा तरीका अपना रहे हैं। जैसे कि बच्चे नशे के चक्कर में चोरी करने लगे हैं। इतना ही नहीं घरेलू वस्तु भी बेचने लगे हैं, ताकि वह नशा का सेवन कर सकें। इस समस्या के कारण माता-पिता बहुत चिंतित हैं। माता-पिता का कहना है कि हमलोग जब नशा करने वाले व्यक्ति को बस्ती में नशा करने से मना करते हैं, तो वह हम बस्ती वालों से लड़ाई-झगड़ा करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि आपलोग हमारा सहयोग करें, ताकि हमारे बच्चों का भविष्य बर्वाद होने से बच सके।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आखिर सड़क पर रहने वाले व्यक्तियों के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों ?

रिपोर्टर: शम्भू

हम आपको बताने जा रहे है कि किस तरह सड़क पर रहने बाले परिवार आगे बढ़ने की कोशिश करते है लेकिन कोई प्रमाण पत्र धारी ना होने की वजह से वह आगे नहीं बढ़ पाते हैं। सुनने में आया कि कुछ बच्चे जब कूड़ा कबाड़ा बीनने से इन्कार करते हैं, तो उनके माता-पिता उन पर अत्याचार करते हैं। इस बेबसी में मासूम बच्चे पूरे दिन कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए इधर-उधर मंडराते हैं। इस समस्या को सुनते हुए बालकनामा पत्रकार से रहा नहीं गया और इनके माता-पिता से मिलने पहुंच गया। वहां जाते ही पत्रकार ने माता-पिता को अपने बारे में जिक्र करते हुए पूछा कि आप अपने बच्चों के साथ इस तरह के व्यवहार क्यों करते हो ? पत्रकार के सवाल का जवाब 37 वर्षीय एक महिला ने दिया कि हम सभी जानते हैं कि जो हम बच्चों के साथ अत्याचार करते हैं, बह गलत है। मगर इस तरह का व्यवहार हम अपने बच्चों के साथ नहीं करेंगे, तो हमारी रोजी-रोटी कैसे चलेगी ? उसने विस्तार से बताया कि बच्चे जब कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो बहुत कम कूड़ा-कबाड़ा मिलता है। क्योंकि जिस स्थान पर हमलोग कूड़ा-कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, उस स्थान पर एक बहुत बड़ा बाजार है और बाजार के दुकानदार हमलोगों की मजाक उड़ाते हैं कि यहलोग इस कामकाज के अलावा और कुछ कर ही नहीं सकते। इनको तो कूड़ा-कबाड़ा बीनने की लत लग गयी

है। इसलिए हमलोग यह काम अपने बच्चों से करवाते हैं। 42 वर्षीय एक पूरूष का कहना है कि इस परिस्थिति से जुझते हुए हमने यह निर्णय लिया था कि अब से हम कूड़ा-कबाड़ा बीनने का काम नहीं करेंगे, कोई नया काम करेंगे, जिसमें हमें इज्जत व सम्मान मिले। इसलिए हमने कई कोठी व होटलों में काम की तलाश की, लेकिन काम की कहीं उम्मीद नहीं जगी। कारण था कि हमारे पास शहरी पता नहीं था। जब हम अपना आधार कार्ड का पता बदलवाने के लिए आधार कार्ड दफ्तर पहुंचे, तो उन्होंने बोला कि आप कहां रहते हैं वहा का पूरा पता बताईए, तो हमलोगों ने बोला कि हम सड़क के किनारे रहते हैं, तो उन्होंने बोला कि सड़क के किनारे का पता नहीं माना जाता है। हमें माफ कर दीजिए। हम आपके आधार कार्ड का पता नहीं बदल सकते हैं।

क्या हमें सुरक्षित रहने का कोई हक नहीं ?

रिपोर्टर: शम्भू

विजिट के दौरान पत्रकार कुछ ऐसी लड़कियों से मिला, जो काफी दुखी थीं। जब पत्रकार ने उन लड़कियों की पीढ़ा सुनी, तो पत्रकार की आंखों में आंसू आ गये। आईए जानते हैं उन मासूम लड़कियों की पीढ़ा। आखिर क्या ऐसी वजह है जिसकी वजह से लड़कियां दुखी हो रही हैं ? पत्रकार जब बातचीत किया, तो लड़कियों ने पत्रकार के सामने खुल के बात की कि आजकल हमारे घर में पिताजी बाहर से शराब पीकर आते हैं और हम लड़कियों को गलत नेत्र से देखते हैं। इससे हम लड़कियां असुरक्षित महसूस करती हैं 15 वर्षीय बालिका ने अपने दुख की दास्तां बताते हुए कहा कि मेरे घर पर पूरे दिन कोई नहीं रहता है। मम्मी सुबह सात बजे ही अपने कामकाज से बाहर चली जाती हैं। दीदी, वह भी मम्मी के साथ ही कामकाज के लिए जाती है। जब मैं घर में अकेली रहती हूं तो मेरे पिताजी शराब पीकर आते हैं और मेरे साथ अश्लील शब्दों में बात करते हैं, जो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। ऐसा मेरे साथ काफी दिनों से हो रहा है लेकिन मैं जब भी अपनी मम्मी से इस विषय में बताती थी, तो उन्हें मेरी बातों का विश्वास नहीं हो रहा था। मेरी मम्मी मेरी बातों को नजरअंदाज कर देती थीं लेकिन एक दिन कुछ ऐसा हुआ, जिसकी वजह से मेरी मम्मी को मेरी बातों पर यकीन हुआं चूंकि उस दिन भी मेरे पिताजी बहुत शराब पिए हुए थे और मेरे साथ अश्लील शब्द का प्रयोग कर रहे थे। इतने में मेरी मम्मी आ गई और मेरे पिताजी की डन्डे से बहुत पिटाई की। वर्तमान में मेरे पिताजी में काफी बदलाव आ चुका है। लेकिन मैं यह नहीं कहना चाहती हूं कि यह सिर्फ मेरे घर की पीढ़ा है। मेरे जैसी न जानें कितनी लड़कियां इस परेशानी से आयेदिन गुजरती हैं मेरा कहना यह है कि कृपया लड़कियों के साथ इस तरह का व्यवहार न करें उन्हें सुरक्षित जीने दें, ताकि हम लड़कियां भी भविष्य में आगे बढ़ सकें।

बच्चों की गुहार

बस्ती में आए प्रतिदिन पानी

बातूनी रिपोर्टरः सोकत व रिपोर्टरः दीपक, पूर्वी दिल्ली

पूर्वी दिल्ली में विजिट करने के दौरान यह बात सामने आई कि वहां आस-पास कई बस्ती हैं, जहां पानी का कोई साधन नहीं है। इस स्थान के सभी माता-पिता तथा बच्चे पीने का पानी भरने के लिए काफी दूर जाते हैं लेकिन कभी-कभी तो उस स्थान पर भी पानी मिलना बहुत मुश्किल हो जाता है। क्योंकि उस स्थान पर भी एक ही नल है, वहां लोग बड़ी संख्या में अनुसार पानी भरते हैं। इस विषय को लेकर जब हमारे पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की, तो बच्चों ने बताया कि हमारी बस्ती में पानी की समस्या है, चार-पांच दिन बाद पीने का पानी आता है, तो आप ही बताईए कि हम चार-पांच दिन तक पानी के बिना कैसे रह सकते हैं ? अगर हमें किसी स्थान पर मुफ्त पीने का पानी नहीं मिलता है, तो हमारे माता-पिता दुकान से खरीदकर पानी लाते हैं, तब हम अपने घर के कार्य में प्रयोग करते हैं। हमारा आप सभी से यही निवेदन है कि इस खबर के माध्यम से कोई हमें मदद करें, ताकि हमारी बस्ती में प्रतिदिन पानी आना शुरू हो जाए। अगर इस तरह पानी की समस्या चलती रही, तो हमारी जिंदगी खतरे में आ सकती है। क्योंकि हमें पता है कि हमारे माता-पिता कितनी कठिन परिस्थिति से जुझकर दो पैसे कमाते हैं, ताकि हमारा परिवार कुशलपूर्वक चल सके। यदि पानी खरीद कर लाना होगा या फिर चार-पांच दिन बाद पानी मिलेगा तो हमारे परिवार का गुजारा कैसे हो सकेगा ?

आईए ! सुनते हैं रूबी की दास्तान

बातूनी रिपोर्टरः रूबी व रिपोर्टरः आंचल, लखनऊ

12 वर्षीय रूबी, अपने परिवार के साथ विकास नगर, सैक्टर 12 ;लखनऊ्द में रहती है। रूबी के परिवार में 6 बहन और एक भाई व माता-पिता हैं परिवार में काफी सदस्य होने के कारण माता-पिता कड़ी मेहनत करते हैं, फिर भी सही प्रकार से परिवार का गुजारा नहीं हो पाता है। रूबी अपने भूतकाल की स्थिति के बारे में जिक्र करते हुए कहती है कि पहले मैं सरकारी स्कूल में कक्षा 2 में पढ़ाई करती थी लेकिन स्कूल में सही प्रकार से पढ़ाई-लिखाई न होने के कारण हमारी माताजी ने स्कूल जाने से मना कर दिया। जब से मैं भी अपने परिवार का खर्चा जुटाने में तरह-तरह के कार्य करने लगी। मेरा मन पढ़ाई-लिखाई करने को करता है लेकिन कामकाज की वजह से मैं कहीं दूसरे स्थान पर पढ़ाई-लिखाई नहीं कर पा रही हूं। जब से मेरी माताजी को यह पता चला है कि सरकारी स्कूल में सही प्रकार से पढ़ाई-लिखाई नहीं होती है, तब से किसी भी सामाजिक संस्था व सरकारी स्कूल भेजने के लिए तैयार नहीं होती हैं। मुझे वह दिन आज भी याद है जब मैं एक संस्था के बारे में अपनी मम्मी से जिक्र की थी कि वह संस्था बच्चों को अच्टे से पढ़ाती-लिखाती है और वहां पर मेरी सहेली भी पढ़ाई करने के लिए जाती है, तो मेरी माताजी ने वहां जाने से इन्कार कर दिया। उनको लगता है कि कहीं पर भी अच्छी तरह से पढ़ाई-लिखाई नहीं होती है। इसलिए मैं अपनी जिंदगी में बहुत दुखी हूं। मैं चाहती हूं कि कोई भईया दीदी मेरी माताजी को समझाए और उन्हें यह विश्वास दिलाए कि वर्तमान में शिक्षा मंत्री बच्चों पर काफी ध्यान दे रही हैं। अब सभी सरकारी स्कूलों में भी अच्टे से पढ़ाई-लिखाई हो रही है और सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे भी भविष्य में आगे बढ़ रहे हैं।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को मिला उनका अधिकार

बातूनी रिपोर्टरः हीना व रिपार्टरः शम्भू, दक्षिण दिल्ली

बच्चों की समस्याओं में आधार कार्ड बनवाना हमेशा से एक बहुत बड़ी समस्या रही है, जिसकी वजह से बच्चों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। जैसे कि स्कूल में दाखिला न होना, बैंक अकाउंट न खुलना और सबसे बड़ी उनकी पहचान न होना। मगर ष्ह सब इसलिए होता था, क्योंकि यह बच्चे सड़क पर रहते थे। रैन बसेरे में एवं पुल के नीचे अपनी जिंदगी गुजारते थे। मगर कोई भी अधिकारी इनकी मदद के लिए आगे नहीं आता था। इसकी वजह से काफी बच्चे चाहकर भी पढ़ नहीं पाए। यह समस्या हमेशा से उनके सपनों की दुनियां की रूकावट बना हुआ था। यह समस्या किसी एक स्थान की नहीं, बल्कि अन्य स्थान पर रहने वाले हर एक सड़क एवं कामकाजी बच्चे की है। बच्चों को अब उनकी इस समस्या का समाधान निजामुद्दीन सेंटर ''सपनों का आंगन'' में पूरा होता नजर आया। वहां लगभग

140 सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उनकी पहचान का अधिकार मिला। वह पहचान आधार कार्ड द्वारा प्राप्त हुई। वर्तमान में इसका असर स्कूल में बढ़ती संख्या में नजर आया और उनको अपनी पहचान भी मिल गई। अभी तो यह परेशानी सिर्फ निजामुद्दीन में आधार कार्ड कैंप द्वारा हल होती नजर आई है, मगर उम्मीद है कि आने वाले दिनों में बढ़े अधिकारी और जो लोग इस कार्य से जुड़े हुए हैं, वह इन बच्चों के सपनों को पूरा करने में मदद कर सकें। हम उम्मीद करते हैं कि इस तरह के कैंप अन्य स्थानों पर भी लग पाएं और असम्भव को हम सब मिलकर सम्भव बना पाएं। बच्चों को उनके अधिकार दिला पाएं। तो चलिए हम सब मिलकर इस समस्या का समाधान निकालते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्या हम बस्ती निवासी सुरक्षित सांस ले पाएंगे?

रिपोर्टरः संगीता, लखनऊ

लखनऊकी एक बस्ती में हमारे बातूनी रिपोर्टर के दौरे के दौरान खबर मिली कि एक बस्ती है, जहां काफी झुग्गी झोपड़ी हैं। उस झुग्गी झोपड़ी से होकर एक घरेलू पानी निकासी नाला है, जिसमें घर में उपयोग किए जाने वाले पानी का निकास होता है लेकिन हमारे बस्ती के कुछ लोग इस नाला को दुरुपयोग करते हैं। 12 वर्षीय बालक का कहना है कि हमारे परिवार वाले जो घरेलू कूड़ा कचरा होता है वह कूड़ेदान में दें कने के लिए जाते है लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो इस नाले में अपना घरेलू कूड़ा कचरा डालते हैं जिसकी वजह से हमारे घरों में काफी बदबू आती है, इस वजह से हमारी बस्ती वाले भी बीमार पड़ रहे हैं लेकिन फिर भी ऐसा करने वालें में बदलाव नहीं आ रहे हैं। इसी बस्ती में रहने वाले बच्चों का कहना है कि जब हमारे माता-पिता उन लोगों से बोलते है कि आपलोग इस नाले में कूड़ा कचरा मत डाला करो, तो हमारे माता-पिता से ही लड़ाई झगडा करने लगते हैं। इसलिए अब हमारे माता-पिता भी कुछ नहीं बोलते हैं उनके इस बर्ताव की वजह से हमें बहुत परेशानी होती हैं इतना ही नहीं जब आंधी तूफान आती है, तो आस-पास फैला हुआ कूड़ा कचरा उड़ने की वजह से यह नाला भर जाता है। जब लोग घरेलू कामकाज करने के लिए पानी का इस्तेमाल करते हैं, तो वह कूड़ा कचरा उस पानी की वजह से कुछ दिन में ही सडने लगता है और सडने की वजह से उसमें से गंदी बदबू आने लगती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि लखनऊ नगर निमग कार्यकर्ता इस खबर के माध्यम से हमारी मदद करें और इस नाला को ढ़क दें, ताकि इस नाला में कूड़ा कचरा न जा सके और हम सुरक्षित सांस ले सकें।

माता-पिता की सोच पर बच्चों को पाठकों की प्रतिक्रिया की अपेक्षा

बातूनी रिपोर्टरः विकास व रिपोर्टरः शम्भू

पत्रकार सपोर्टर ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। उनके साथ होने वाली समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। इस मीटिंग की शुरूआत में साथियों ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि वह कौन-कौन से कार्य करते हैं, और कौन से कार्य उनको करना अच्छा नहीं लगता है। इसी तरह चर्चा करते हुए एक 14 वर्षीय बालसाथी ने बताया कि जिस बाजार में हम बच्चे कार्य करते हैं, उस बाजार के नाम का जिक्र करना नहीं चाहूंगा। लेकिन बाजार में हम बच्चों के साथ होने वाली परेशानियों के बारे में हम अवश्य चर्चा करूंगे। बालसाथी ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हमारा परिवार बहुत गरीब है, इसलिए मेरे माता-पिता कबाड़ा बीनने का कार्य करते है, जिससे हमारा घर का खर्चा चलता है। लेकिन हमारे माता-पिता हम बच्चों को इस कूड़ा-कबाड़ा के कार्य में शामिल नहीं करते हैं, क्योंकि हमारे माता-पिता की सोच है कि अगर हम अपने बच्चों से कूड़ा कबाड़ा बिनवाने का कार्य करवाएंगे, तो बड़े होकर भी इसी कार्य में लिप्त रहेंगे। इसलिए हम बच्चों को

मैकेनिक के कार्य सिखाने के लिए भेज रहे हैं। लेकिन नादान माता-पिता यह नहीं सोचते है कि हम बच्चे मैकेनिक का कार्य किस प्रकार सीख रहे हैं, हमसो मसतस-पिता को नहीं पता। हमारे मालिक अलग-अगल स्थान से पुरानी गाड़ी का टायर लेकर आते हैं और हम बच्चों को उस टायर को साफ तथा पॉलिश करने के लिए बोलते हैं। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि जब हम टायर को ब्रुश से साफ करते हैं, तो कभी-कभी टायर के तार हमारी अंगुलियों में भी चुभ जाते हैं, जिसकी वजह से हमारी अंगुलियों में बहुत दर्द होता हैं यह हमारे माता-पिता सुनते ही नहीं हैं उन्होंने यह निणर्य लिया हुआ है कि अब तुमलोग यही काम करोगे। हमारे माता-पिता की यह सोच है कि भविष्य में हर काम बंद हो सकता है लेकिन मैकेनिक का कार्य कभी बंद नहीं हो सकता। क्योंकि दिन पर दिन गाड़ियों में बढोतरी होती जा रही है।

बच्चे चाहते हैं, जिस सड़क पर नहीं है लालब्बती, वहां हो लालबत्ती का निर्माण

रिपोर्टरः दीपक, पूर्वी दिल्ली

हमारे पत्रकार ने पूर्वी दिल्ली में विजिट किया और बच्चों से उनकी समस्याओं के बारे में बातचीत की। बच्चों ने अपनी परेशानी बताते हुए कहा कि हम अपने परिवार वालों के साथ इस स्थान पर रहते हैं और यह भी बताया कि उनके घर सड़क के किनारे हैं, जिसकी वजह से उन्हें काफी कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। वह अपनी परेशानियां बताते हुए कहते है कि उनके घरों के बाहर एक सड़क है जहां अक्सर तेज रफ्तार के वाहन आते-जाते रहते हैं। इस स्थान पर अन्य राजस्थानी लोग भी रहते हैं, जो प्रतिदिन एक जैसी समस्या का सामना करते हैं। जैसे कि अक्सर बच्चों को वाहन से टक्कर लग जाती है और काफी चोट आ जाती है, फिर भी उनके माता-पिता नशे में धुत रहते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि इस सड़क पर कोई भी लालबत्ती नहीं है जिसकी वजह से यह समस्या और भी बढ़ती नजर आ रही है। प्रतिदिन बच्चे इस

परेशानी से जूझते रहते हैं। उनको वाहन से चोट लग जाती है और कई बच्चे इसकी वजह से मृत्यु का शिकार हो चुके हैं। हम बच्चे विनती करते हैं कि इस सड़क पर लालबत्ती की स्थापना हो; साथ ही साथ ट्रैफिक पुलिस भी वहां मौजूद रहे। यह समस्या सिर्फ पूर्वी दिल्ली की ही नहीं है, बल्कि कई ऐसी जगह भी हैं, जहां रोज बच्चे अनचाही दुघ्रटना का शिकार बन जाते हैं। बच्चों की मांग है कि उनके यहां भी यह सब प्रबंध जल्द से जल्द हों, ताकि बच्चे अपनी जिंदगी खुलकर जी सकें।

माता-पिता की सकारात्मक सोच से बच्चे जा रहे नियमित स्कूल

बातूनी रिपोर्टर रिया व रिपोर्टर शम्भू गुड़गांव

गुड़गांव में बसी एक बस्ती, जिसको जलवायु टाबर के नाम से जानते हैं। इस स्थान में भूतकाल में एक भी बच्चा स्कूल नहीं जाता था। इनके माता-पिता अपने गांव-घर छोड़कर इस स्थान पर कमाने के लिए आए हैं जब भी कोई व्यक्ति इन बच्चों के माता-पिता से बच्चों को स्कूल भेजने का जिक्र करत था, तो माता-पिता का कहना था कि हम इस स्थान पर कमाने खाने के लिए आए हैं। अपने बच्चों को पढ़ाने लिखाने के लिए नहीं लेकिन कुछ समय बाद सामाजिक संस्था ने इस स्थान पर कार्य करना शूरू किया और बच्चों के माता पिता को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया, जिसका परिणाम कुछ इस तरह सामने आया कि कुछ ही दिनों के बाद सभी माता-पिता बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो गए। समाजिक संस्था के कार्यकर्ताओं ने जैसे-तैसे

करके इन सभी बच्चों को स्कूल में दाखिला करवा दिया। लेकिन यह परेशानी यहीं नहीं खत्म हो जाती है। स्कूल में दाखिला दिलाने के बाद स्कूल दूर होने की वजह से बच्चे पैदल स्कूल जाना पसंद नहीं करते थे। जब हमारे पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की तो बच्चों का कहना था कि हमारा स्कूल बहुत दूर है। जाने-आने में बहुत थक जाते हैं जिसकी वजह से कक्षा में हमें नींद आती है। इसलिए हमें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता है। यह परेशानी जब माता-पिता ने सुनी तो आपस में एक बैठक की और बैठक के दौरान सभी माता-पिता ने यह निर्णय लिया कि अब हम सभी लोग अपने बच्चों के लिए कुछ पैसे जमा करेंगे और एक टैम्पू किराए पर लेंगे, जो हमारे बच्चे को प्रतिदिन स्कूल ले आ-जा सकेगा। उन्होंने ऐसा ही किया। वर्तमान में सभी बच्चे टैम्पू के माध्यम से कुशलपूर्वक स्कूल जा रहे हैं।

क्या गुरूग्राम नगर निगम कार्यकर्ता करेंगे हमारी मदद?

बातूनी रिपोर्टरः रिया व रिपोर्टरः शम्भू, गुड़गांव

जैसे कि हम सभी जानते हैं कि आजकल काफी बारिश हुई है, जिसकी वजह से झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चे काफी परेशान हैं। आईए सुनते हैं उनकी कहानी, उनकी जुबानी। 12 वर्षीय बालक ने बताया कि हम सभी बच्चे अपने परिवार के साथ झुग्गी-झोपड़ी में रहते हैं। रोज हमारी मम्मी-पापा काम करने के लिए बाहर चले जाते हैं और हम बच्चे अपने घर पर अकेले रहते हैं। जब बारिश होती है तो सड़क पर काफी पानी जमा हो जाता है, तो पूरे दिन सड़क पर

जमे हुए पानी में छोटे छोटे बच्चे खेलते रहते हैं जिसकी वजह से उनके शरीर में खुलजी-खाज होने की सम्भावना रहती है। क्योंकि उस सड़क से ट्रेक्टर व कार भी निकलते हैं जिसकी वजह से पानी बहुत गंदा हो जाता है। इस समस्या पर हमारा कहना है कि यह सड़क इस जगह पर गहरी है, जिसकी वजह से हलकी भी बारिश होती है, तो काफी पानी जमा हो जाता है। इसलिए हम चाहते हैं कि गुरूग्राम नगर निगम कार्यकर्ता हमारी मदद करें और इस सड़क को उंचा कर दिया जाए, तभी हम सभी बच्चे इस परेशानी से आजादी प्राप्त कर सकते हैं। दूसरी ओर बच्चों ने बताया कि यह सिर्फ हमारी परेशानी नहीं है। इस परेशानी से हमारे माता-पिता भी गुजरते हैं। जैसे कि जब सबेज या अन्य सामान खरीदने के लिए बाहर जाते हैं, तो उसी गंदे पानी से होकर जाते हैं। इसलिए हम गुरूग्राम नगर निगम कार्यकर्ताओं का सहयोग मांग रहे हैं, ताकि हम उस मुसीबत से मुक्ति पा सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

दुष्ट व्यक्तियों के खिलाफ हो कार्यवाही, तभी बदबू से मिल सकेगी हम बच्चों को मुक्ति

रिपोर्टरः शम्भू, नोएडा

हम जिस बस्ती के बारे में जिक्र कर रहे हैं, उसका इस खबर में नाम गोपनीय रख रहे हैं। हमें पता चला कि उस बस्ती के पास एक बहुत बड़ा नाला है जिसमें बस्ती में रहने वाले लोग घरेलू पदार्थ दें कते हैं। इसकी वजह से उस नाले में से काफी बदबू आती है। इस बदबू से परेशान बस्ती के कुछ लोगों ने इसके खिलाफ आवाज़ उठायी थी, जिसकी वजह से नाले में घरेलू पदार्थ फेकना बंद हो गया। बस्ती वालों ने नाले के आस-पास साफ-सुथरा करके अपनी चरपाई डालकर शाम के समय ठंडी-ठंडी हवा का आनन्द लेने लगे। यह सिलसिला कुछ ही दिन तक चला। उस बस्ती के आस-पास कुछ दुष्ट व्यक्ति भी रहते हैं, जो पूरे दिन गुन्डागर्दी करते हैं। वह व्यक्ति षाम के समय नाले के पास बैठकर शराब पीते हैं और शराब की खाली बोतलें तोड़कर आपस में लड़ाई झगड़ा करते रहते हैं। नाले के किनारे खुले में मूत्र करते हैं। इतना ही नहीं, बस्ती में से आने-जाने वाली लड़कियों से भी सही प्रकार से बातचीत नहीं करते हैं। इसलिए बस्तीवासी बहुत परेशान हैं। बस्ती वालों ने दोबारा गंदे नाले में कूड़ा डालना शुरू कर दिया है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि जब हमारे माता-

पिता ने उस नाले को साफ सुथरा किया था, तो उस नाले के पास एक नोटिस बोर्ड लगा दिया था और उस नोटिस बोर्ड पर लिखा था कि इस नाले में कोई भी व्यक्ति कूड़ा-कचरा नहीं दें केगा। सभी बस्तीवासियों को यह पता था कि अगर कोई व्यक्ति इस नोटिस बोर्ड में लिखे हुए नियमों का उल्लंघन करेगा, तो उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। लेकिन इसका परिणाम कुछ सही नहीं हुआ। हम बच्चे चाहते हैं कि इस तरह दूसरे व्यक्तियों को परेशान करने वाले व्यक्ति के साथ सख्त कार्यवाही करनी चाहिए, ताकि वह कभी दूसरे व्यक्ति को परेशान न करें।

नशेबाजों का दुर्व्यवहार, बच्चों का खेलना हुआ दुश्वार

रिपोर्टरः दीपक

हम अक्सर बच्चों के विकास के अधिकार को लेकर चर्चा करते हैं कि बच्चों के लिए विकास का अधिकार मिलना चाहिए। लेकिन वर्तमान में काफी ऐसे स्थान हैं, जहां बच्चे विकास के अधिकार से बांछित हैं। हमें एक ऐसी खबर मिली है, जिस स्थान का नाम हम इस खबर में गुप्त रख रहे हैं उस जगह पर एक बहुत बड़ा पार्क होने के बाद भी बच्चे सही प्रकार से खेल नहीं पाते हैं। क्योंकि उस पार्क के अंदर कुछ बड़े असामाजिक तत्व लोग हर प्रकार का नशा करते हैं और आपस में गाली-गलौज करते रहते हैं। जब हम बच्चे उस पार्क में खेलने के

लिए जाते हैं, तो इस प्रकार के लोग हमारे साथ भी गाली-गलौज करते हैं, जो हम बच्चों को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता है। इस कारण उन बच्चों पर भी गलत प्रभाव पड़ता है, जो बच्चे हमारे साथ खेलने के लिए जाते हैं। 12 वर्षीय बालक ने कहा कि हम सभी बच्चे अगर उन व्यक्ति को नशा करने से मना करते हैं, तो वह हम बच्चों को मारने के लिए दौड़ते हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि हम बच्चों के लिए एक अलग पार्क होना चाहिए, ताकि हम बच्चे सुरक्षित खेल सकें। हम बच्चों को पूरा विश्वास है कि खेल मंत्री इस खबर के माध्यम से हमारी परेशानी को दूर करेंगे और हम बच्चे पार्क में सुरक्षित खेल पाएंगे।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

बढ़ते कदम के बालसाथियों ने बड़े ही उत्साह से विभिन्न-विभिन्न स्थानों पर मनाया स्वतंत्रता दिवस।

विश्व पर्यावास दिवस के अवसर पर हड़को द्वारा वंचित वर्ग बच्चों के लिए आयोजित चित्रकाला प्रतियोगिता जिसमें सपनों का आंगन सेंटर के बालसाथियों ने बढ़चढ़कर लिया हिस्सा।

भाईयों और बहनों का यह अनोखा त्योहार सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने मनाया बड़े ही धूमधाम से।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471